बगिया का बसन्त बौराया

फिर भी साजन पास न आया

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय

अमराई में फूली सरसों
कोयल कूकी डाली डाली
छायी नयनों में मादकता
अंग - अंग से फूटी लाली

पूरी बदल गई है काया
मस्त मलय ने गीत सुनाया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया

अंगड़ाई लेकर फूलों ने
नदियों के निर्मल कूलों ने
अलसाई धरती का आंचल
हिला- हिला कर झूलों ने

पपिहा को है आज जगाया
जिसने पिउ का गीत सुनाया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया

झोली निकली है गुलाल की
चढ़े कन्हैया लाल पालकी
राधा खड़ी खड़ी मधुवन में
राह देखती नन्द लाल की

सखियों ने है रास रचाया
बिन सावन के मोर नचाया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया

किसी हाथ में है पिचकारी
किसी राग में है सिसकारी
बिना कृष्ण के आज द्रौपदी
घूम रही है मारी - मारी

राज दुशासन का है छाया
अन्त धर्म राज का आया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया

करछना, प्रयागराज, उ० प्र०

ISSN:2583-8849